श्री राधासर्वेश्वरो विजयते

श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः

नित्य नियमावली

हे अर्जुन ! उन मुझमें चित्त लगाने वाले प्रेमी भक्त जनों का मैं शीघ्र ही मृत्यु रूप संसार सागर से उद्धार करने वाला होता हूँ

श्री राधा सर्वेश्वरो विजयते श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः
परम कृपालवे श्रीसद्गुरू भगवते नमो नमः

नित्य नियमावली

सन् 2012 कुल प्रतियाँ – 1000

प्रकाशक –

राधा कृष्ण परिवार सेवा ट्रस्ट

भक्ति धाम कालोनी, आन्यौर परिक्रमा मार्ग, गोवर्धन,
मथुरा (उ०प्र०) ☎ 09456009925,0565 – 2812060

विषय सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
1.	निकुंज वृन्दावन का चिंतन	3
2.	युगल अष्टयाम सेवारत सखियोंकी वंदना	4
3.	प्रार्थना	5
4.	लीला चिंतन वल्लरी	8
5.	सेवा सुख (दोहावली)	15
6.	श्रीराधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र	29
7.	श्रीकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र	33
8.	रूद्राष्टक (शिव स्तुति)	36
9.	गोपी गीत	39
10.	प्रातःकालीन युगल स्तुति	45
11.	मध्यकालीन युगल स्तुति	54
12.	संध्याकालीन युगल स्तुति	67
13.	शयनकालीन युगल स्तुति	72
14.	भगवान् कृष्ण की कृपा तथा दिव्य प्रेम प्राप्ति के लिए	79

निकुंज वृन्दावन का चिंतन

चल मन श्रीवृन्दावन माहिं।

जा मधि मोहनमहल सुशोभित कल्पतरू की छाहिं।।
अष्टमोहिनी कुञ्ज सखी जन सेवा सुख विलसाहिं ।
अष्टद्वार को महल मनोहर जाके सम कोउ नाहिं ।।
ताके चहुँ दिसि चार सरोवर शोभा देख लुभाहिं ।
ता आगे चहुँ ओर सखिन की कुञ्ज प्रेम सरसाहिं।।
रहसि कुञ्ज में ठौर-ठौर प्रिया प्रीतम रस बरसाहिं।
दिन प्रतिदिन नयेनये महोत्सव करत खेल सुख पाहिं।।
अष्ट हृदनिया वन सुखकारी देखत नैंन सिराहिं ।
निर्मल जल परिपूरित यमुना घाट घाट टकराहिं ।।
क्रीडत नित्य जहाँ पिय प्यारी देखत काम लजाहिं ।
करूण दास वनराज छटा पर बारबार बलि जाहिं।।

युगल अष्टयाम सेवारत सखियों की वन्दना

युगल – जागरण, मंगल सेवा करती सखियों को वन्दन ।

मल उबटन सुरभित जलसों नहलाती सखियों को वन्दन ।

भूषण भोग श्रृंगार आरती करती सखियों को वन्दन ।

वन विहार अरु राजभोग करवाती सखियों को वन्दन ।

सेज उत्थापन संध्या सेवा करती सखियों को वन्दन ।

ब्यारू अचवन शयन आरती करती सखियों को वन्दन ।

शयन करा रंध्रन सों दर्शन करती सखियों को वन्दन ।

ब्याह शयन दिन – रैन खवासी करती सखियों को वन्दन ।

प्रार्थना

हे राधे ! हे श्याम – प्रियतमे !
हम हैं अतिशय पामर, दीन ।
भोग – रागमय, काम – कलुषमय
मन प्रपञ्च – रत, नित्य मलीन ।।
शुचितम , दिव्य तुम्हारा दुर्लभ
यह चिन्मय रसमय दरबार ।
ऋषि – मुनि – ज्ञानी – योगी का भी
नहीं यहाँ प्रवेश – अधिकार ।।
फिर हम जैसे पामर प्राणी
कैसे इसमें करें प्रवेश ।

मन के कुटिल, बनायें सुन्दर

ऊपर से प्रेमी का वेश ।।

पर राधे ! यह सुनो हमारी

दैन्यभरी अति करुण पुकार ।

पड़े एक कोने में जो हम

देख सकें रसमय दरबार ।।

अथवा जूती साफ करें,

झाड़ू दें – सौंपो यह शुचि काम ।

रज कण के लगते ही होंगे

नाश हमारे पाप तमाम ।।

होगा दम्भ दूर , फिर पाकर

कृपा तुम्हारी का कण–लेश।
जिससे हम भी हो जायेंगे
रहने लायक तव पद–देश।।
जैसे– तैसे हैं, पर स्वामिनी !
हैं हम सदा तुम्हारे दास।
तुमहीं दया कर दोष हरो,
फिर दे दो निज पद–तल में वास।।
सहज दयामयि ! दीनवत्सला !
ऐसा करो स्नेह का दान।
जीवन–मधुप धन्य हो जिससे
कर पद–पंकज मधु का पान।।

लीला चिंतन वल्लरी

श्री गणेश माँ शारदा सद्‌गुरू तारण हार ।
राधा माधव युगल छवि सिमरऊँ बारम्बार ।।

भक्त जनो का दु:ख जब जाना ।
प्रगटे मथुरा श्री भगवाना ।।
कालिन्दी तट गोकुल आये ।
ब्रज वासी मन अति हर्षाये ।।
छठ के दिना पूतना आई ।
अधम देह तजि शुभ गति पाई ।।
चरण चोट शकटासुर मार्‌यो ।
पल में तृणावर्त संहार्‌यो ।।
घुटरुनु चलत करत बहु लीला ।
गोपी जन चित्त चौर छबीला ।।

मारवन चौर बने गोपाला ।
अति सुरव पावें ब्रज की बाला ।।
छुप के ब्रज रज भोग लगायो ।
निज मुरव में ब्रह्माण्ड दिरवायो ।।
ऊरवल सों बांध्यो महतारी ।
यमलार्जुन जड़ योनि टारी ।।
गोकुल सों बृन्दावन आये ।
वत्सासुर बक मार गिराये ।।
अजगर रूप धार अघ आयो ।
मुक्ति दे निज धाम पठायो ।।
लीला धर की लीला न्यारी ।
ब्रह्मा मोह भयो अति भारी ।।
निज ऐश्वर्य रूप दिरवायो ।

करूणा करि हरि मोह मिटायो ।।
कालिय विषधर नाथ्यो जल में ।
दावानल को पी गये पल में ।।
बन-बन जाय चरावत गैया ।
ग्वाल सखा संग दाऊ भैया ।।
चीर हरण करि शिक्षा दीन्हीं ।
द्विज पत्निन कर भिक्षा कीन्हीं ।।
देवराज को मान मिटायो ।
नख पर श्री गिरिराज उठायो ।।
वरुण लोक सों नंद छुड़ायो ।
ग्वालन परम धाम दिखलायो ।।
शरद पूनम हरि वेणु बजाई ।
वृन्दावन महारास रचाई ।।

राधा प्रेम सुधा करि पाना ।
विहरें ब्रज युवतिन संग कान्हा ।।
अजगर सो पितु रक्षा कीन्ही ।
मार्‌यो शंखचूड़ मणि छीनी ।।
वृषभासुर केशी संहार्‌यो ।
खेलत में व्योमासुर मार्‌यो ।।
व्याकुल नन्दगाम बरसाना ।
आये मथुरा श्री भगवाना ।।
कुब्जा पर करुणा बरसाई ।
मारि कंस पितु बंदि छुड़ाई ।।
सांदीपनी पहिं विद्या लीन्ही ।
मृत गुरू पुत्र दक्षिणा दीन्ही ।।
भेज्यो ब्रज उद्धव ब्रह्मज्ञानी ।

प्रेम देखि सुध – बुध बिसरानी ।।
भक्तन हित रणछोड़ कहाई ।
तज मथुरा द्वारिका बसाई ।।
रूक्मिणी हरण कीन्ह यदुराई ।
भांति अनेक विवाह रचाई ।।
भौमासुर रण मार गिरायो ।
देवन जीति कल्पतरू लायो ।।
सोलह सहस्र एक सौ आठा ।
सब रानिन कर अद्‌भुत ठाठा ।।
बाणासुर को जीत्यो रण में ।
नृग उद्धार कियो प्रभु – क्षण में ।।
छल सों जरासंध मरवायो ।
तासु कैद नृप बंदि छुड़ायो ।।

राजसूय पूजा स्वीकारी ।
मार्‌यो शिशुपाल अहंकारी ।।
द्रोपदी चीर बड़ावन हारे ।
दीन पाण्डवों के रखवारे ।।
शाल्व दन्तवक्र संहारे ।
अभिमानी राजा सब मारे ।।
दीन सुदामा हृदय लगाये ।
छिलका विदुरानी के भाये ।।
पारथ रथ सारथि भगवाना ।
मोह मिटायो देकर ज्ञाना ।।
युद्ध महाभारत जितवायो ।
ब्रह्मास्त्र सों गर्भ बचायो ।।
शाप दिला यादव संहारे ।

भार मिटा गोलोक पधारे ।।

जय – जय मुरलीधर गिरिधारी ।

गोवर्धन गिरिराज बिहारी ।।

यशुमति नंदन नंद दुलारे ।

आन पड़ा प्रभु तेरे द्वारे ।।

दीजै नाथ मोहि ब्रज वासा ।

कीजै निज दासन कर दासा ।।

करुणाकर करुणा बरसाओ ।

करुण दास हिय मांहि समाओ ।।

लीला चिंतन बल्लरी – पढ़े जो चित्त लगाये ।

दिव्य प्रेम रस पान करि – परम धाम को जाये ।।

श्री गोवर्धन तलहटी – कृष्णा ऐकम चेत ।

गुरु कृपा सों बल्लरी – प्रगटी चिंतन हेत ।।

सेवा सुख (दोहावली)

जै-जै श्री हितु सहचरी, भरी प्रेम रस रंग।
प्यारी प्रीतम के सदा, रहति जु अनुदिन संग।।
अष्टकाल बरनन करूँ, तिनकी कृपा मनाय।
महावाणी सेवा जु सुख, अनुक्रम तै दरशाय।।
सखी नाम रत्नावली, स्तोत्र पाठ तहँ कीज।
पुनि गुरु सखिन कृपा जु लहि,युगल सेव चित दीज।।
प्रात काल ही ऊठि के, धारि सखी कौ भाव।
जाय मिलै निज रूप सों, याकौ यहै उपाव।।
मोहन मन्दिर चौक में, मिलि सब सखी समाज।
बीन बजावहिं गावहीं, मधुर-मधुर सुर साज।।

जै मृगनैंनी राधिके, रंग रँगीली बाल।
गोरी कंचन बेलि ज्यौं, लपटी स्याम तमाल।। 1

रसिक बिहारी लाल की, जीवनि प्रान अधारि ।
रसिक रसीली रस भरी, अलबेली सुकुमारि ।। 2
सब निसि बीती खेल में, तउ उर अधिक उमंग ।
ऐसे नवल किसोर वर, हियरैं बसौ अभंग ।। 3
बोलत सी आ नाह यों, मधुर-मधुर मृदुबाल ।
सुख आसन राजैं ललित, रलित रङ्ग. सँग लाल ।। 4
प्रिया वदन सुखमा सदन, रह्यौ प्रेम परिपूरि ।
जा मधि प्रीतम प्रान की, सरबस जीवन मूरि ।। 5
श्रमकन बन तन बनि रहे, गहे लाड़ गम्भीर ।
बिहरत सेज बिहार विवि, सुरत समर रनधीर ।। 6
मनचीते कारज भये, रन जीते जुगलाल ।
उरझि रहे अँग अंग यों, कंचन बेलि तमाल ।। 7
लाल भामते जीयके, लसौ बसौ हिय धाम ।
स्यामा सहज सनेहिनी, सहज सनेही स्याम ।। 8

प्यारी जीवनि प्यारे की, प्यारौ प्यारी प्रान।
रङ्ग. महल में विलसहीं, दोऊ एक समान ।। 9
कुंज भवन में करत दोउ, सुरत रङ्ग. रति केलि।
उरझि रहे सुरझत नहीं, तन-तन मन-मन मेलि ।। 10
सुरत रङ्ग. के रंग में, रहे रंगि अँग अंग।
अद्भुत आजु विराजहीं, प्यारी प्रीतम संग ।। 11
अंग अंग बस ह्वै रहे, जद्दपि स्याम सुजान।
तद्दपि पीवत प्यार सों, अधर सुधा रस पान ।। 12
आरस तजिये जाउँ बलि, लगी भुरहरी हौन।
त्यौं-त्यौं पौंढ़त तानि पट, बानि परी यह कौन ।। 13
सुनि सहचरि के बचन प्रिय, उठी सुरति सुख लूटि।
सँभरि सेज तें सुभट ज्यों, विजयी होय बधूटि ।। 14
सब निसि लूटि सुरत सुख, प्रान प्रिया हरि संग।
भाग सुहाग सची रची, रसिक रवन के रंग ।। 15

जै नव रंग बिहारिनी, नव बासा सुख कारि।
जै श्री हरिप्रिया स्वामिनी, श्रीराधा सुकुँवारि ।। 16
नित्य किसोरि किसोर दोउ, नित्य कामिनी कंत।
नित बिलास बिलसत दोउ, नित नव भाव अनंत ।। 17
अलबेले आँगन खरे, अंस अंस भुज धारि।
लै दरपन दिखरावहीं, है समुही सहचारि ।। 18
रति रस चिह्न सँवारहीं, सहचरी निज पट छोर।
ज्यों ज्यों सकुचत जात हैं, नागर नवल किसोर ।। 19
मुख सोधन मुख बसन करि, मंगल भोग अरोग।
आरति हित बैठे दोउ, श्री हरिप्रिया सँयोग ।। 20
मंगल आरति वारहीं, मंगल रङ्ग. रङ्ग.ीली।
मंगलमय मुख छबि निरखि, मंगल दृग उनमीलि ।।21
कमल नैंन बस कारिनी, नित्य किसोरी बाम।
सुजस उजागरि नागरी, जय राधा सुखधाम ।। 22

एक रङ्ग. में रँगे दोउ, एक प्रान द्वै गात ।
बदन बिलोकत परस्पर, छिन बिछुरें न सुहात ।। 23
नैंननि नैंन मिलावहीं, कहि कहि बैंन रसाल ।
रसिकन के धन सहज दोउ, लाड़ लड़ीले लाल ।। 24
ल्याई कुंज सनान में, निज सहचरि समुझाय ।
पहिराये पट पोंछि अंग, जथारीति अन्हवाय ।। 25
अंस भुजा दीनें दोऊ, भीने रंग अपार ।
करन सिंगार सुहाँवते, आये कुंज सिंगार ।। 26
देखि देखि सखि कहति यों, कैसे बनें उदार ।
जीवनि हितुजन जियन की,नखसिख सजि सिंगार।।27
प्रेम पुलकि अँग अंग में, देत हेत जुत कौर ।
भोग सिंगार अरोगहीं, सुकुंवारन सिरमौर ।। 28
अँचवनि अँचवावति बियें, हितू हियें हुलसाय ।
रोरी तिलक रचावहीं, बीरी भोग लगाय ।। 29

सजि लाई आरति सखी, अग्रवर्त्ति कर दीय ।
अद्भुत रीति उतारहिं, निरखि निरखि छबि बीय ।।30
यह सुख दै सब सखिन कों, सहज सुरत रस लीन ।
कुंजन कुंजन बिहरहीं, निज इच्छा आधीन ।। 31
रंगद रसदादिकन मन, सहज करत संचार ।
कुंजबिहारी लाल यों, विहरत कुंजबिहार ।। 32
विधि पूर्वक आदर सुरुचि, आरोगन रस पुञ्ज ।
हितू सखिन के हेत करि, आये भोजन कुञ्ज ।। 33
सामा सजि सब सहचरी, परसत परम रसाल ।
निजु निजु रुचि भोजन करत,दोउ लाड़िली लाल ।।34
अँचवनि करि श्री हरिप्रिया, बीरी मुख में लीनि ।
हित प्रमोद भरि मोद सों,तिहि छिन आरति कीनि ।।35
पीवत पानी वारि के, जुगलचंद छबि देखि ।
अलकलड़े सुकुंवार जै,कहि कहि बचन विसेखि ।।36

चले अंस भुज दीनि दोउ, करी हंस गति हीनि।
सुख आसन रङ्ग. भीनि बनि, बैठे परम प्रवीनि ।। 37
मध्य काल दिन जानि कें, उन्मादनि उन्मादि।
सब सनमुख ह्वै रुख गहें, कहें जै नमो आदि ।। 38
(श्री)हरिप्रिया स्वामिनी प्रणमि,पुनि प्रणमन प्रिया प्रान।
कमलनैंन श्रीकृष्ण कहि, बरनत बिबिध बिधान ।।39
मन मोहन मोहन महल, पौढ़े जाय प्रज्यंक।
प्यारी सहचरी सब रहीं, न्यारी करन निसंक ।। 40
सुख सरसत बरसत रसें, रुचि तरंग नहिं पार।
(श्री)हरिप्रिया दोउ बिलसहीं, सुमन सेज साधार ।। 41
कहति परस्पर सहचरी, उर में भरी उछाहु।
निरखिनिरखि सुख या समै, लेहु नैंनन कौ लाहु ।। 42
कोक कला कुल में कुसल, कल किसोर कमनीय।
मन मोहत है मोहनी, मूरति अति रमनीय ।। 43

कृष्ण बल्लभा लाड़िली, राधाबल्लभ लाल ।
बसहु निरंतर हीय में, आनँद रूप रसाल ।। 44
अँग अँग आभा हरन मन, सब सुख सींव सरूप ।
अति अलबेली निपटहीं, रँग रस भरी अनूप ।। 45
चक्रवर्तिनी जोरि यह, जीवनि प्राण धनीय ।
श्री राधा चूड़ामनी, रसिक मुकुट मनि पीय ।। 46
यह सुख मुख कहत न बनै, जो सुख सजवति सेज ।
पान अदन रस वदन कौ, देत लेत हियें हेज ।। 47
जै जै आनँद कंदनी, श्रीहरिप्रिया किसोरि ।
जै जै राधा रसिकिनी, रसिक बिहारी जोरि ।। 48
उत्त्थापन के भोग की, विधिवत रचना बानि ।
अरूगावति श्री हरिप्रियें,निरखि हरखि हियें आनि ।।49
अँचवन अँचि मुख–बास लै, दे गरबाँह बिसाल ।
फूल सखी की फूलि में, चले फूलि दोउ लाल ।। 50

अंग अंग रस रंग में, रली अली अलबेलि।
आरति जानि दुहून की, आरति करति सहेलि ।। 51
पराभक्ति रति वर्द्धिनी, स्यामा सब सुख दैनि।
रसिक मुकुटमनि राधिके, जै नव नीरज नैनि ।। 52
नव-नव रंगि त्रिभंगि जै, स्याम सुअंगी स्याम।
जै राधे जै हरिप्रिये, श्रीराधे सुख धाम ।। 53
संध्या वंदन समय कौ, इहि विधि सुखहिं सजाय।
मधुर गान मिलि गावहीं, मृदु बाजिंत्र बजाय ।। 54
निरखि हरखि श्रीहरिप्रिया, अँग संगिनी सहेलि।
लाल लाड़िली करत मिलि, रहसि कुंज में केलि ।। 55
ऐंन मैंन सुख सैंन दोउ, मूरति मृदुल बिहार।
करत रहौ निसिदिन विपिन,छिनछिन हूँ बलिहार।।56
या सोभा सम करन को, रति कंदर्प करोरि।
हरन हितू जन हियनि की, बनी भाँवति जोरि ।। 57

सिंघासन श्रीहरिप्रिया, सोहत सुढर ढरे ।
रसिक बिहारि बिहारनी, दोउ गुन रूप भरे ।। 58
नख सिख सुंदर बरन बर, अंग अंग आभर्न ।
जोरी स्यामा – स्याम की, बनी मैंन मन हर्न ।। 59
इहि प्रकार बीती जबै, घरी चार रजनी ।
अदन सदन आये दोऊ, संग लिये सजनी ।। 60
गरस परसपर देत मुख, सरस पुलक अँग अंग ।
जिय ज्यारी व्यारी करत, पिय प्यारी के संग ।। 61
अम्बुज बदनी सहचरी, विधि अँचवन अँचवाहि ।
बीरी रचि रचि देत कर, जुगलचंद मुख चाहि ।। 62
निज इच्छा अनुसारनी, निज सहचरि मृगनैंनि ।
सारति वारति आरती, समझि सैन की सैंनि ।। 63
सयन अयन सुख सखी जहाँ, सची सुपेसल सेज ।
तापर पौढ़े एक पट, ओढ़ि रँगीले हेज ।। 64

हितू सहचरि हित भरी, चाँपि चरन चित चाय ।
हरें हरें हटि पट दिये, झटि दै बाहरि आय ।। 65
अछन अछन उच्चरहु री, ज्यों ये परें न जागि ।
श्रीहरिप्रिया सुख सेज पर, सोये सुख श्रम पागि ।। 66
देखवत ही दृग थकित ह्वै, रहत गहत नहिं चेत ।
श्रीहरिप्रिया के अंक में, अति निसंक छबि देत ।। 67
अर्द्ध सरवरी में रही, घरी छ सातक आय ।
तब इच्छा अनुसारनी, सहचरि दिये जगाय ।। 68
सोभा हद सोहत सरस, रद छद चित्र अमंद ।
लै लरमुक्ता वारहीं, लखि जगमग मुख चंद ।। 69
निकसे बिकसे बदन बिबि, विपुल पुलक भुजजोरि ।
भई प्रमुदित प्रमदावली, ज्यों लहि चंद चकोरि ।। 70
प्रान प्रियन के जियन की, जानि मोद मनमानि ।
अली चली विमली जहाँ, रासथली रसदानि ।। 71

बिबिध भाँति गुनभेद गति, रीझि भीजि अँग अंग ।
नचत नवल नागर दोऊ, रहसि रासि रस रंग ।। 72
इहि बिधि रास रहस्य रमि, श्रीहरिप्रिया सहेत ।
बिबिध भाँति रस रीति सों, ब्याह सदन सुख लेत ।। 73
ब्याहि बिराजें सेज पर, श्रीहरिप्रिया लै संग ।
हुलसि हुलसि हिय बिलसहीं,बाढ़्यौ अतिरति रंग ।।74
अनहोनें सुख लै चले, गौनें के गुन जाल ।
सिंघासन पर आयकें, बैठत भये दोउ लाल ।। 75
रंग रँगीली सहचरी, रंग रँगीली आदि ।
श्रीराधा रङ्ग. बिहार कों, बरनति है उनमादि ।। 76
कृष्णरूप श्री राधिका, राधे रूप श्रीस्याम ।
दरसन कों ये दोय हैं, हैं एकहि सुखधाम ।। 77
श्रवन सुने स्तव सुचित श्री, राधेस्याम सुजान ।
मध्यनिसा मन मानिकें, दियौ सबकों सनमान ।। 78

सुख सों सेज बिराजिये, दियें भुजा अँकमाल ।
स्यामा जू के लाड़िले, लाड़-लड़ीले लाल ।। 79
कहत बिहारीलाल बलि, सुनिय बिहारिनि बैंन ।
अर्द्ध-निसा आई यहै, अब कीजै सुख सैंन ।। 80
तन मन मिलि बिहरत दोउ, अति उदार सुकँवार ।
मन मोहन मन मोहिनी, भीने रंग अपार ।। 81
अलक-लड़ैती लाड़िली, अलक लड़ौ सुकुँवार ।
अलक लड़ो मोहन महल, अलक-लड़ोइ बिहार ।।82
श्रीहरिप्रिया प्रिया जु हरि, हिलिमिलि हियें सभीर ।
रहो सदा सुखनिधि सनें, सुरत समर रनधीर ।। 83
सुख फूली आनँद लता, सरस महमही प्रेम ।
रसिक सहेलिन कें सदा, रस बरषहिं नित नेम ।। 84

दोहा

रसिक रंग रेली सबै, रसिक सहेली गाय ।

आवैं निज निज कुंज में, लालैं लाड़ – लड़ाय ।।
इहि बिधि सेवा – सुख समै, मंगल सैंन प्रज्यंत ।
ध्यावैं सो पावैं सदा, परम तंत को तंत ।।

कुण्डलिया

हीनश्रद्धा नास्तिक हरि – धर्म बहिर्मुख होइ ।
जिनसों यह जस महारस कहौ सुनौ जिनि कोइ ।।
कहौ सुनौ जिनि कोइ बिना इक अननि उपासिक ।
ताहू में यह भाव सखी वृन्दावन वासिक ।।
श्रीहरिप्रिया पद पद्म को मन मधुकर जिहिं कीन ।
सोई सब तैं श्रेष्ठ है और सबै जग हीन ।।

अष्टकाल सेवा जु सुख, अहल महल की बात ।
कछू अलभि ताहि न रहै, साधहि सो साछ्यात ।।

श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र

मुनीन्द्र – वृन्द – वन्दिते त्रिलोक – शोक – हारिणी,
प्रसन्न – वक्त्र – पंकजे निकुंज – भू – विलासिनी।
व्रजेन्द्र – भानु – नन्दिनी व्रजेन्द्र – सूनु – संगते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
अशोक – वृक्ष – वल्लरी – वितान – मण्डप – स्थिते,
प्रवाल – ज्वालपल्लव – प्रभारुणाङ्घ्रि – कोमले ।
वराभय – स्फुरत् – करे – प्रभूत – सम्पदालये,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
अनंग – रंग – मंगल – प्रसंग – भंगुरभ्रुवाम्,
सुविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त – बाण – पातनैः ।
निरन्तरं वशीकृत – प्रतीत – नन्दनन्दने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।

तड़ित्सुवर्ण – चम्पक – प्रदीप्त – गौर – विग्रहे,
मुख – प्रभा – परास्त – कोटि – शारदेन्दुमण्डले ।
विचित्र – चित्र – संचरच्चकोर – शाव – लोचने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
मदोन्मदातियौवने प्रमोद – मान – मण्डिते,
प्रियानुराग – रंजिते कला – विलास – पण्डिते ।
अनन्य – धन्य – कुंज – राज – काम – केलि – कोविदे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
अशेष – हाव – भाव – धीर – हीर – हार – भूषिते,
प्रभूतशातकुम्भकुम्भ – कुम्भि – कुम्भ – सुस्तनी।
प्रशस्त – मंद – हास्य – चूर्ण – पूर्ण – सौख्य – सागरे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
मृणाल – बाल – वल्लरी – तरंग – रंग – दोर्लते,

लताग्र – लास्य – लोल – नील लोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ – मुग्ध – मोहनाश्रये,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
सुवर्ण – मालिकाञ्चिते – त्रिरेख – कम्बु – कण्ठगे,
त्रिसुत्र – मंगलीगुण – त्रिरत्न – दीप्त – दीधति ।
सलोल – नीलकुन्तले प्रसून – गुच्छ – गुम्फिते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
नितम्ब – बिम्ब – लम्बमान – पुष्प – मेखला – गुणे,
प्रशस्त – रत्नकिंकिणी – कलाप – मध्य मञ्जुले।
करीन्द्र – शुण्ड – दण्डिका – वरोह – सौभगोरूके,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
अनेक – मन्त्रनाद – मञ्जु – नूपुरारवस्खलत्,
समाज – राजहंस – वंश – निक्वणातिगौरवे ।

विलोलहेमवल्लरी – विडम्बि – चारु – चङ्क्रमे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
अनन्त – कोटि – विष्णुलोक – नम्र – पद्मजार्चिते,
हिमाद्रिजा – पुलोमजा – विरञ्चिजा – वरप्रदे ।
अपार – सिद्धि – वृद्धि – दिग्ध – सत्पदांगुली – नखे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ।।
मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी,
त्रिवेद – भारतीश्वरी प्रमाण – शासनेश्वरी ।
रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोद – काननेश्वरी,
ब्रजेश्वरी ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोस्तुते ।।
इतीदमद्भुतं – स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी,
करोतु सततं जनं कृपा कटाक्ष भाजनम् ।
भवेत्तदैव – संचित – त्रिरूप – कर्म – नाशनं,
लभेत्तदा – व्रजेन्द्र – सूनु – मण्डल – प्रवेशनम् ।।

श्रीकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र

भजेब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं,

सुभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम् ।

सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं,

अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ।।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं,

विधूतगोपशोचनं नमामिपद्मलोचनं ।

करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं,

महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणं ।।

कदम्बसूनुकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं,

ब्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।

यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,

युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकं ।।
सदैव पादपंकजं मदीयमानसेनिजं,
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकं ।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं,
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ।।
भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं,
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् ।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदासदालिसंगिनं,
दिने-दिने नवं-नवं नमामि नन्दसम्भवं ।।
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं,
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनं ।
नवीन गोपनागरं नवीनकेलि-लम्पटं,

नमामि मेघसुन्दरं – तडित्प्रभालसत्पटम् ।।

समस्त गोप मोहनं हृदम्बुजैक मोदनं

नमामिकुंजमध्यगं प्रसन्न भानुशोभनम् ।

निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं

रसालवेणुगायकं नमामिकुंजनायकम् ।।

विदग्ध गोपिकामनो मनोज्ञतल्पशायिनं

नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् ।

किशोरकान्तिरंजितं दृगंजनं सुशोभितं

गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ।

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा

मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् ।

प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्य धित्ययूपमान

भवेत्त्सनंद नन्दने भवे भवे सुभक्तिमान ।।

रूद्राष्टक (शिव स्तुति)

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं ।
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ।।
करालं महाकाल कालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ।।
तुषाराद्रि संकाश गोरं गभीरं ।
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा ।

लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ।।
चलत्कुंडलं भ्रु सुनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।।
चिदानंद संदोह मोहापहारी ।

प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।

भजंतीह लोके परे वानराणां ।।

न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं ।

प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।

नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।।

जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानं ।

प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ।।

रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

गोपी गीत

जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते।। 1

शरदुदाशये साधुजातसत्
सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा ।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ।। 2

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ।। 3

न खलु गोपिकानन्दनो भवा–
नखिलदेहिनामान्तरात्मदृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ।। 4
विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ।। 5
व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय ।। 6
प्रणतदेहिनां पापकर्शनं

तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्।।7
मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती–
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ।। 8
तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।। 9
प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमंगलम् ।

रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ।। 10
चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति ।। 11
दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ।। 12
प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपंकजं शन्तमं च ते

रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ।। 13

सुरतवर्धनं शोकनाशनं

स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।

इतररागविस्मारणं नृणां

वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ।। 14

अटति यद् भवानह्नि काननं

त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।

कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते

जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ।। 15

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा–

नतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।

गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः

कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ।। 16

रहसि संविदं हृच्छयोदयं

प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।

बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते

मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ।। 17

व्रजवनौकसां व्यक्तिरंग ते

वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमंगलम् ।

त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां

स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ।। 18

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु

भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।

तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्

कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः।।19

प्रात:कालीन युगल स्तुति

दोहा

जै नव रंग बिहारिनी, नव बासा सुख कारि ।
जै श्री हरिप्रिया स्वामिनी, श्रीराधा सुकुँवारि ।।

स्तोत्र

जय जय श्री नवरंग बिहारिनि ।
जय जय नव बासा सुख कारिनि ।। 1
जय जय श्री नवकेलि परायनि ।
जय जय विश्वानन्द विधायनि ।। 2
जय जय श्री वृंदावन रानी ।
जय जय परमोत्तम सुख दानी ।। 3
जय जय श्रीमुख अद्भुत सोभा ।
जय जय निज बिलास रस गोभा ।। 4
जय जय श्री प्रीतम की प्यारी ।

जय जय सरस सरूप उज्यारी ।। 5
जय जय श्री राधा गुन गोरी ।
जय जय मधुरा मधु रस बोरी ।। 6
जय जय श्री अति अमित अनूपा ।
जय जय सहज सुभद्र सरूपा ।। 7
जय जय श्री मोहन मनहारी ।
जय जय पद्‌मा प्रान अधारी ।। 8
जय जय श्री अहलादिनि देवी ।
जय जय स्यामा सब सुख सेवी ।। 9
जय जय श्री पिय – बल्लभ राधा ।
जय जय सारद सब सुख साधा ।। 10
जय जय श्री नव नित्य नवीना ।
जय जय परम कृपाल प्रबीना ।। 11
जय जय श्री सब सुख की धामा ।

जय जय देव देविका नामा ।। 12

जय जय श्री लावनिता देसा ।

जय जय सुन्दरि सरस सुवेसा ।। 13

जय जय श्री कलकोकिल बैनी ।

जय जय पद्मा हरि सुख दैनी ।। 14

जय जय श्री गुन रूप गँभीरा ।

जय जय इन्दिरा हर हीरा ।। 15

जय जय श्री छबि कोटि छबीली ।

जय जय रामा हिये बसीली ।। 16

जय जय श्री आनँद अभिरामा ।

जय जय वामा सब सुख धामा ।। 17

जय जय श्री मोहन मन हरनी ।

जय जय कृष्ण प्रिया सुख करनी ।। 18

जय जय श्री रँग रूप रसाली ।

जय जय पद्माभा प्रति – पाली ।। 19

जय जय श्री रस बरषा करनी ।

जय जय श्रुतिरूपा श्रुति बरनी ।। 20

जय जय श्री परिपूरन कामा ।

जय जय भागवती भवि भामा ।। 21

जय जय श्री ससि कोटि प्रकासी ।

जय जय माधवि हिये निवासी ।। 22

जय जय श्री वृंदावन बसिता ।

जय जय असित सिता रस रसिता ।।23

जय जय जस जग विख्याता ।

जय जय गुन आकरि सुख दाता ।।24

जय जय श्री महा प्रेम प्रसिद्धा ।

जय जय बिसद बल्लभा रिद्धा ।। 25

जय जय श्री गुन गन आगारा ।

जय जय गौरांगी आधारा ।। 26

जय जय श्री कंचन दिबि अंगी ।

जय जय कुँवरि सुकेसि सुरंगी ।। 27

जय जय श्री छबि चित्र विचित्रा ।

जय जय पावन करन पवित्रा ।।28

जय जय श्री अलि अलक लड़ैती ।

जय जय कुमकुम कला बड़ैती ।। 29

जय जय श्री नव नित्य नवेली ।

जय जय सुखदा हितू सहेली ।। 30

जय जय श्रीराधा निज नामिनि ।

जय जय श्रीहरिप्रिया जय स्वामिनि ।।31

दोहा

नित्य किसोरि किसोर दोउ, नित्य कामिनी कंत ।
नित बिलास बिलसत दोउ, नित नव भाव अनंत ।।

स्तोत्र

जय श्रीराधा नित्य किसोरी
रसिक बिहारी नित्य किसोर ।
जय श्रीराधा पिय चित चोरी
प्रीतम प्रान प्रिया चित चोर ।। 1
जय श्रीराधा राजति गोरी
गुन मंदिर बर सुंदर स्याम ।
जय श्रीराधा रसिकिनि जोरी
रसिक रसीलौ सब सुख धाम ।। 2
जय श्रीराधा रूप अगाधा
मन मोहन सोभा नहिं पार ।
जय श्रीराधा हरनी बाधा
बाधा हर हरि प्रान अधार ।। 3

जय श्रीराधा अति सुकुँवारी
अति अद्भुत प्यारो सुकुँवार ।
जय श्रीराधा पिय की प्यारी
प्यारी को प्रिय परम उदार ।। 4
जय श्रीराधा कृष्णबल्लभा
राधाबल्लभ कृष्ण कृपाल ।
जय श्रीराधा कृपा सुल्लभा
दयानिधे हरि दीन दयाल ।। 5
जय श्रीराधा नैंन बिसाला
कृष्ण कमल दल नैंन बिसाल ।
जय श्रीराधा रूप रसाला
रंग रँगीलौ रूप रसाल ।। 6
जय श्रीराधा परम प्रवीना

चित सुख चातुर परम प्रवीन ।
जय श्रीराधा नित्य नवीना
नीरज नैंन सु नित्य नवीन ।। 7
जय श्रीराधा रति रस रंगी
कृष्ण कोटि कंदर्प सुरंग ।
जय श्रीराधा मनि कनकांगी
मरकत मनि मोहन मृदु अंग ।। 8
जय श्रीराधा रवनी कवनी
रहसि रवन रस जोरि बिचित्र ।
जय श्रीराधा दुख दव दवनी
दुख दव दवन प्रवीन पवित्र ।। 9
जय श्रीराधा वारिज बदनी
वारिज बदन वृन्दावन चंद ।

जय श्रीराधा सब सुख सदनी
सब सुख सदन सदानँद कंद ।। 10
जय श्रीराधा लावनि ललिता
लावन ललित लाड़िलौ लाल ।
जय श्रीराधा सब सुख सलिता
सब सुख सलित सदा सब काल ।। 11
जय श्रीराधा सहज सरूपा
सकल सिरोमनि सहज सरूप ।
जय श्रीराधा अमित अनूपा
अद्भुत आभा अमित अनूप ।। 12
जय श्रीराधा कंता कामिनी
कंत कामिनी राधा कंत ।
जय श्रीराधा हरिप्रिया स्वामिनि
विलसत नव नव भाव अनंत ।। 13

मध्यकालीन युगल स्तुति

दोहा

मध्य काल दिन जानि कें, उन्मादनि उन्मादि ।
सब सनमुख ह्वै रुख गहें, कहें जै नमो आदि ।।

स्तोत्र

जय नमो राधा रसिकिनी ।
जय नमो मृदु मधु मुसिकिनी ।। 1
जय नमो प्रीतम बल्लभा ।
जय नमो प्रणतनि सुल्लभा ।। 2
जय नमो पिय मन रंजनी ।
जय नमो बिरह बिभंजनी ।। 3
जय नमो प्रेम पयोधिनी ।
जय नमो रति रस बोधिनी ।। 4
जय नमो सब सुख सागरी ।

जय नमो सब गुन आगरी ।। 5
जय नमो अद्‌भुत आननी ।
जय नमो मन हर माननी ।। 6
जय नमो चंद्रप्रभा हरा ।
जय नमो प्रेमा परपरा ।। 7
जय नमो कोकिल कलरवा ।
जय नमो भव भंजनि भवा ।। 8
जय नमो बीरी चर्बिता ।
जय नमो गुननिधि गर्बिता ।। 9
जय नमो अधर प्रवालनी ।
जय नमो रदन सुढालनी ।। 10
जय नमो नासा चटकनी ।
जय नमो पिय मन अटकनी ।। 11
जय नमो नकबेसरि धरा ।

जय नमो प्रीतम मन हरा ।। 12
जय नमो नैंन बिसालनी ।
जय नमो रूप रसालनी ।। 13
जय नमो अंजन अंजिता ।
जय नमो खंजन गंजिता ।। 14
जय नमो ईछन आतुरा ।
जय नमो चितवनि चातुरा ।। 15
जय नमो भौहें सोहिनी ।
जय नमो पिय मन मोहिनी ।। 16
जय नमो श्रुति ताटंकिनी ।
जय नमो अलकनि बंकिनी ।। 17
जय नमो आड़ ललाटिका ।
जय नमो दिव्य सुहाटिका ।। 18
जय नमो सीस सुफूलनी ।

जय नमो नील दुकूलनी ।। 19

जय नमो सुभ सीमंतनी ।

जय नमो रस बरसंतनी ।। 20

जय नमो सुख सरसंतनी ।

जय नमो सुभ दरसंतनी ।। 21

जय नमो गण्ड उदारनी ।

जय नमो चिबुक सुचारनी ।। 22

जय नमो कंठ अदूषना ।

जय नमो जगमग भूषना ।। 23

जय नमो कंचुकि कस बनी ।

जय नमो नवरंग रस सनी ।। 24

जय नमो उरज सुढारनी ।

जय नमो मणिगण हारनी ।। 25

जय नमो मुक्ता दामिनी ।

जय नमो अति अभिरामिनी ।। 26
जय नमो उदर सुबेसिनी ।
जय नमो नाभि सुदेसिनी ।। 27
जय नमो सुंदरि ग्रीवनी ।
जय नमो सोभा सींवनी ।। 28
जय नमो बाहु बिचित्रनी ।
जय नमो परम पवित्रनी ।। 29
जय नमो चूरी चित्रनी ।
जय नमो मोहन मित्रनी ।। 30
जय नमो कंकन कंचना ।
जय नमो अति रस संचना ।। 31
जय नमो पहुँचि प्रभाउका ।
जय नमो अगनित भाउका ।। 32
जय नमो हरिकर पाननी ।
जय नमो रत्न बिधाननी ।। 33

जय नमो मणि मुद्रावली ।
जय नमो नग हीरावली ।। 34
जय नमो नख चन्द्रावली ।
जय नमो परम प्रभावली ।। 35
जय नमो करतल कलितनी ।
जय नमो रंग सुललितनी ।। 36
जय नमो कृस कटि राजनी ।
जय नमो किंकिनि बाजनी ।। 37
जय नमो पृथुल नितंबनी ।
जय नमो मन अवलंबनी ।। 38
जय नमो जंघ सुकेलनी ।
जय नमो प्रीतम झेलनी ।। 39
जय नमो जानु सुहेतकी ।
जय नमो पिंडुरी केतकी ।। 40

जय नमो जेहरि हेमकी ।

जय नमो मूरति प्रेमकी ।। 41

जय नमो गुल्फ सुसाजिता ।

जय नमो नूपुर बाजिता ।। 42

जय नमो एड़ी अद्भुता ।

जय नमो रंग सु संजुता ।। 43

जय नमो पद पद पानभा ।

जय नमो सब सुख दानभा ।। 44

जय नमो अंगुरी चारुभा ।

जय नमो सुखद सुढारुभा ।। 45

जय नमो हंसक अनवटा ।

जय नमो सोहत सुभ घटा ।। 46

जय नमो नखमणि बिसदनी ।

जय नमो पद तल रसदनी ।। 47

जय नमो कंता कामिनी ।
जय नमो नवघन दामिनी ।। 48
जय नमो छबि चंपकतनी ।
जय नमो सहजहिं सुखसनी ।। 49
जय नमो गौरांगी प्रिया ।
जय नमो स्यामा सुभ श्रिया ।। 50
जय नमो रास बिलासनी ।
जय नमो रहसि हुलासनी ।। 51
जय नमो प्रेम प्रकासनी ।
जय नमो नेह निवासनी ।। 52
जय नमो रंग बिहारिनी ।
जय नमो पिय हिय हारिनी ।। 53
जय नमो पिय उर धारिनी ।
जय नमो रस विस्तारिनी ।। 54

जय नमो अखिलानंदनी ।

जय नमो वल्लभ – बंदनी ।। 55

जय नमो पिय मन फंदनी ।

जय नमो परमाकंदनी ।। 56

जय नमो जीवनि जीयकी ।

जय नमो प्रेमा पीयकी ।। 57

जय नमो प्रेम प्रदायिका ।

जय नमो नागरि नायिका ।। 58

जय नमो रति रमनीयका ।

जय नमो अति कमनीयका ।। 59

जय नमो प्रगलभ भक्तिदा ।

जय नमो तुरिय बिरक्तिदा ।। 60

जय नमो निगमागम सदा ।

जय नमो रसिकानंददा ।। 61

जय नमो राधा नामिनी ।
जय नमो हरिप्रिया स्वामिनी ।। 62

दोहा

(श्री)हरिप्रिया स्वामिनी प्रणमि,पुनि प्रणमन प्रिया प्रान।
कमलनैंन श्रीकृष्ण कहि, बरनत बिबिध बिधान ।।

स्तोत्र

जय श्रीकृष्ण कमल दल लोचन
दुख मोचनि मृग लोचनि राधा ।। 1
जय श्रीकृष्ण स्यामघन सुंदर
दिव्य घटा तन गोरी राधा ।। 2
जय श्रीकृष्ण रसीलौ नागर
रसिक रसीली नागरि राधा ।। 3
जय श्रीकृष्ण छबीलौ दूलह
नवल छबीली दुलहिनि राधा ।। 4

जय श्रीकृष्ण मनोहर मूरति

परम मनोहर मूरति राधा ।। 5

जय श्रीकृष्ण सदा सुख सागर

सहज सदा सुख सिंधुनि राधा ।। 6

जय श्रीकृष्ण राधिका बल्लभ

कृष्ण बल्लभा रसिकिनि राधा ।। 7

जय श्रीकृष्ण प्रिया मन मोहन

प्रान प्रिया मन मोहनि राधा ।। 8

जय श्रीकृष्ण चारु चन्द्रानन

सुधा सदन ससि वदनी राधा ।। 9

जय श्रीकृष्ण पद्म परिपूरन

पूरन परम पदमनी राधा ।। 10

जय श्रीकृष्ण तमाल तरुन छबि

कनक लता छबि छाजति राधा ।। 11

जय श्रीकृष्ण मीन मन मानहु

निरमल जल जनु जीवनि राधा ।। 12

जय श्रीकृष्ण नित्य नवरंगी

नवरंगनि रँग भीनी राधा ।। 13

जय श्रीकृष्ण सुकोमल सीवां

अति सुकुँवारी सीवां राधा ।। 14

जय श्रीकृष्ण अमित गुण आगर

अति अद्‌भुत गुण आगरि राधा ।। 15

जय श्रीकृष्ण विसाल विभाकर

रूप रसाल प्रभाकरि राधा ।। 16

जय श्रीकृष्ण सुभग सुभ सुन्दर

सरस सुभग सुभ सुंदरि राधा ।। 17

जय श्रीकृष्ण बिलास बिसारद

विसद बिलास बिचच्छनि राधा ।। 18

जय श्रीकृष्ण दिव्यदुति कंद्रप

कोटि दिव्य रति राजति राधा ।। 19

जय श्रीकृष्ण किसोर नित्य नव

नित्य नवीन किसोरी राधा ।। 20

जय श्रीकृष्ण नीलमणि आभा

कंचन मणि आभा अति राधा ।। 21

जय श्रीकृष्ण लाड़िलौ प्रीतम

प्यारी प्रिया लाड़िली राधा ।। 22

जय श्रीकृष्ण सिरोमनि सर्वस

सर्व सिरोमनि सुंदरि राधा ।। 23

जय श्रीकृष्ण अखिल परमापर

परमापर प्रानेसा राधा ।। 24

जय श्रीकृष्ण कलपतरु तरवर

तरतम कलप तरोवरि राधा ।। 25

जय श्रीकृष्ण हरे हरि स्वामी

श्रीहरिप्रिया स्वामिनी राधा ।। 26

संध्याकालीन युगल स्तुति

दोहा

पराभक्ति रति वर्द्धिनी, स्यामा सब सुख दैनि ।
रसिक मुकुटमनि राधिके, जै नव नीरज नैनि ।।

स्तोत्र

जयति जै राधा रसिकमनि मुकुट मन–हरनी त्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति गोरी नव किसोरी सकल सुख सीमा श्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति रति रस बर्द्धिनी अति अद्‌भुता सदया हिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति आनँद कंदनी जगबंदनी बर बदनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।

जयति स्यामा अमित नामा वेद विधि निर्वाचिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति रास – बिलासनी कल कला कोटि प्रकासिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति बिबिधि बिहार कवनी रसिक रवनी सुभ धिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति चंचल चारु लोचनि दिव्य दुकुला भरनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति प्रेमा प्रेम सीमा कोकिला कल बैनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति कंचन दिव्य अंगी नवल नीरज नैनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति वल्लभ – वल्लभा आनंद – कलभा तरुनिये ।

पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति नागरि गुन उजागरि प्रान धन मन हरनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति नौतम नित्य लीला नित्य धाम निवासिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति गुण माधुर्य भूपा सिद्धि रूपा शक्तिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति सुद्ध सुभाव सीला स्यामला सुकुमारिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।
जयति जस जग प्रचुर परिकर हरिप्रिया जीवनि जिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ।।

दोहा

नव – नव रंगि त्रिभंगि जै, स्याम सुअंगी स्याम ।

जै राधे जै हरिप्रिये, श्रीराधे सुख धाम ।।

स्तोत्र

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे ।
जयकृष्ण जय कृष्णकृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ।।
स्यामा गोरी नित्य किसोरी प्रीतम जोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो गुन गरबीलो श्रीकृष्ण ।।
रासविहारिनि रसबिसतारिनि पिय उर धारिनि श्रीराधे ।
नव – नव रंगी नवल त्रिभंगी स्याम सुअंगी श्रीकृष्ण ।।
प्रान पियारी रूप उज्यारी अति सुकुँवारी श्रीराधे ।
मैंन मनोहर महा मोद कर सुंदर बर तर श्रीकृष्ण ।।
सोभा सैनी मोभा मैनी कोकिल बैनी श्रीराधे ।
कीरतिवंता कामिनिकंता श्री भगवंता श्रीकृष्ण ।।

चंदा-वदनी कुंदा रदनी सोभा सदनी श्रीराधे।
परम उदारा प्रभा अपारा अति सुकुँवारा श्रीकृष्ण ।।
हंसागवनी राजति रवनी क्रीड़ा कवनी श्रीराधे।
रूप रसाला नैंन बिसाला परम कृपाला श्रीकृष्ण ।।
कंचनबेली रति रस रेली अति अलबेली श्रीराधे।
सबसुख सागर सब गुन आगर रूप उजागर श्रीकृष्ण ।।
रवनी रम्या तर तर तम्या गुण आगम्या श्रीराधे।
धाम निवासी प्रभा प्रकासी सहज सुहासी श्रीकृष्ण ।।
शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि उर उन्मादिनिश्रीराधे।
अँग अँग टौना सरस सलौना सुभग सुठौना श्रीकृष्ण ।।
राधा नामिनि गुणअभिरामिनि हरिप्रियास्वामिनि श्रीराधे।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ।।

शयनकालीन युगल स्तुति

दोहा

रंग रँगीली सहचरी, रंग रँगीली आदि ।
श्रीराधा रंग बिहार कों, बरनति है उनमादि ।।

स्तोत्र

श्रीराधा रंगबिहारिनि, श्रीराधा पिय उरधारिनि ।
श्रीराधा सुख बिसतारनि, श्रीराधा रति सुखसारनि ।।
श्रीराधा अति सुकुँवारी, श्रीराधा स्यामा प्यारी ।
श्रीराधा रूप उज्यारी, श्रीराधा जोबन वारी ।।
श्रीराधा नेह नवीना, श्रीराधा प्रेम प्रवीना ।
श्रीराधा रति रसभीना, श्रीराधा हित आधीना ।।
श्रीराधा गुन गरबीली, श्रीराधा छैल छबीली ।
श्रीराधा सोभा सीली, श्रीराधा रसिक रसीली ।।

श्रीराधा स्याम सहेली, श्रीराधा कंचन बेली ।
श्रीराधा गरब गहेली, श्रीराधा अति अलबेली ।।
श्रीराधा नित्य किसोरी, श्रीराधा गुन निधि गोरी ।
श्रीराधा मन मृग डोरी, श्रीराधा प्रीतम जोरी ।।
श्रीराधा सब सुख सागरि, श्रीराधा सब गुन आगरि ।
श्रीराधा रूप उजागरि, श्रीराधा नव नित नागरि ।।
श्रीराधा दिव्य सुदामिनि, श्रीराधा भव्य सुभामिनि ।
श्रीराधा कंता कामिनि, श्रीराधा भा अभिरामिनि ।।
श्रीराधा सोभा सैंनी, श्रीराधा मोभा मैंनी ।
श्रीराधा पंकज नैंनी, श्रीराधा कोकिल बैंनी ।।
श्रीराधा मृदु मधु हसिता, श्रीराधा द्विज दुति लसिता ।
श्रीराधा पिय हिय बसिता, श्रीराधा रति रस रसिता ।।
श्रीराधा कृष्ण बल्लभा, श्रीराधा कृपा सुल्लभा ।

श्रीराधा दंभ दुल्लभा, श्रीराधा प्रेम मुल्लभा ।।
श्रीराधा कोमल अंगा, श्रीराधा मैंन तरंगा ।
श्रीराधा उरसि उमंगा, श्रीराधा केलि अभंगा ।।
श्रीराधा कुंजनिवासिनि, श्रीराधा रासबिलासिनि ।
श्रीराधा प्रेम प्रकासिनि, श्रीराधा प्रभा प्रवासिनि ।।
श्रीराधा वारिज बदनी, श्रीराधा सुखमा सदनी ।
श्रीराधा बिसद विरदनी, श्रीराधा मोहन मदनी ।।
श्रीराधा हंसा गवनी, श्रीराधा राजति रवनी ।
श्रीराधा क्रीड़ा कवनी, श्रीराधा दुःखहिं दवनी ।।
श्रीराधा जीवनि जी की, श्रीराधा प्यारी पीकी ।
श्रीराधा हितू सु ही की, श्रीराधा रहसि रसी की ।।
श्रीराधा लावनि ललिता, श्रीराधा अमृत सलिता ।
श्रीराधा कोमल कलिता, श्रीराधा करुणा बलिता ।।
श्रीराधा चंपक बरनी, श्रीराधा चारु अभरनी ।

श्रीराधा पिय चित हरनी, श्रीराधा प्रेम वितरनी ।।
श्रीराधा कुंचित केसा, श्रीराधा सहज सुवेसा ।
श्रीराधा महा सुदेसा, श्रीराधा पिय प्रानेसा ।।
श्रीराधा वामा भामा, श्रीराधा स्यामा रामा ।
श्रीराधा नित्य सुनामा, श्रीराधा नित्य सुधामा ।।
श्रीराधा मोहन मित्रा, श्रीराधा परम पवित्रा ।
श्रीराधा चातुर चित्रा, श्रीराधा चारु चरित्रा ।।
श्रीराधा परा भक्तिदा, श्रीराधा सुद्ध सक्तिदा ।
श्रीराधा सानुरक्तिदा, श्रीराधा गुण विरक्तिदा ।।
श्रीराधा रंग रँगीली, श्रीराधा हियें बसीली ।
श्रीराधा बार बड़ीली, श्रीराधा लाड़-लड़ीली ।।
श्रीराधा मोहनि मूरति, श्रीराधा सोहनि सूरति ।
श्रीराधा परमा पूरति, श्रीराधा नित अविछूरति ।।

श्रीराधा सुंदरि सोभा, श्रीराधा माधुरि मोभा ।
श्रीराधा आनँद गोभा, श्रीराधा लोचन लोभा ।।
श्रीराधा रूप मंजरी, श्रीराधा रंग मंजरी ।
श्रीराधा नवल मंजरी, श्रीराधा नेह मंजरी ।।
श्रीराधा सब सुख साधा, श्रीराधा गुणनि अगाधा ।
श्रीराधा हरणी बाधा, श्रीराधा हरिप्रिय राधा ।।

दोहा

कृष्णरूप श्रीराधिका, राधे रूप श्रीस्याम ।
दरसन कों ये दोय हैं, हैं एकहि सुखधाम ।।

स्तोत्र

राधेकृष्ण राधेकृष्ण, कृष्ण कृष्ण राधे राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, स्याम स्याम राधे राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, नव घन गोरी राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सुंदर जोरि राधे ।।

राधेकृष्ण राधेकृष्ण, अद्‌भुत रूपा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सहज सरूपा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, मोहनि मूरति राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सोहनि सूरति राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, नवरंगभीना राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, परम प्रवीना राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, कोमल अंगा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सहज अभंगा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, अति सुकुँवारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सुखद सुढारा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, अति कमनीया राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, रति रमनीया राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, परमापुंजे राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, रहसि निकुंजे राधे ।।

राधेकृष्ण राधेकृष्ण, सब सुख सारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, परम उदारा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, पिय प्राणेसा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, दिव्य सुवेसा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, मनहर मित्रा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, विसद विचित्रा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, मंगल नामा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, दिव्यगुण धामा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, नीरज नैंना राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, आनंद ऐंना राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, नित्य विहारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, प्रान अधारा राधे ।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, रूप उज्यारी राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, हरिप्रिया प्यारी राधे ।।

भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा तथा दिव्य प्रेम प्राप्ति के लिये

भगवान् श्रीकृष्ण की प्रसन्नता तथा प्रेम की सहज ही प्राप्ति के लिये महादेवी श्रीपार्वतीजी के पूछने पर भगवान् श्री शंकर ने उन्हें एक ऐसा स्तोत्र बताया, जिसका नियम-संयम तथा श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करने से बिना जप, बिना सेवा तथा बिना ही पूजा के श्रीकृष्ण की कृपा तथा दुर्लभ प्रेम की प्राप्ति हो सकती है। यह महत्त्वपूर्ण स्तोत्र 'माहेश्वरतन्त्र' के 47वें पटल का है। नीचे इसी को हिंदी-अनुवाद सहित दिया जा रहा है-

पार्वत्युवाच

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि यथा कृष्णः प्रसीदति ।
विना जपं विना सेवां विना पूजामपि प्रभो ।। 1

यथा कृष्णः प्रसन्नः स्यात्तमुपायं वदाधुना ।
अन्यथा देवदेवेश पुरुषार्थो न सिद्ध्यति ।। 2

पार्वती बोलीं – भगवन्! प्रभो! जिस उपाय से बिना जप, बिना सेवा और बिना पूजा के भी भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न हों, वह मैं सुनना चाहती हूँ। देव–देवश्वर! जिस प्रकार से भी भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न हों, वह उपाय इस समय मुझे बताइये; क्योंकि श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के बिना कोई पुरुषार्थ सिद्ध नहीं होता।

शिव उवाच

साधु पार्वति ते प्रश्नः सावधानतया शृणु ।
विना जपं विना सेवां विना पूजामपि प्रिये ।। 3
यथा कृष्णः प्रसन्नः स्यात्तमुपायं वदामि ते ।
जपसेवादिकं चापि बिना स्तोत्रं न सिद्ध्यति ।। 4

भगवान् शिव ने कहा – पार्वती! तुम्हारा प्रश्न

बहुत सुन्दर है, अब तुम सावधानी के साथ सुनो। प्रिये! बिना जप, बिना सेवा और बिना पूजा के भी जिस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न हो सकते हैं, वह उपाय मैं तुम्हें बताता हूँ। वह उपाय है एक स्तोत्र, जिसके बिना जप, सेवा आदि भी सिद्ध नहीं होते हैं।

कीर्तिप्रियो हि भगवान् परमात्मा पुरुषोत्तमः ।
जपस्तन्मयतासिद्ध्यै सेवा स्वाचाररूपिणी ।। 5
स्तुतिः प्रसादनकरी तस्मात् स्तोत्रं वदामि ते ।

भगवान् परमात्मा पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण अपने गुण-कीर्तन से प्रसन्न होते हैं। उनका जप उनमें तन्मयता की सिद्धि के लिये किया जाता है। भगवान् की सेवा सदाचार स्वरूपा है और उनकी स्तुति उन्हें प्रसन्न करनेवाली-उनका कृपा-प्रसाद प्राप्त करानेवाली है। इसलिये मैं तुमसे स्तोत्र का वर्णन

करता हूँ।

सुधाम्भोनिधिमध्यस्थे रत्नद्वीपे मनोहरे ।। 6
नवखण्डात्मके तत्र नवरत्नविभूषिते ।
तन्मध्ये चिन्तयेद् रम्यं मणिगेहमनुत्तमम् ।। 7
परितो वनमालाभिर्ललिताभिर्विराजिते ।
तत्र संचिन्तयेच्चारु कुट्टिमं सुमनोहरम् ।। 8

पहले निम्नाङ्कित प्रकार से भगवान् का ध्यान करना चाहिये। ध्यान में यह देखें कि सुधासागर के बीच एक मनोहर रत्नद्वीप है। उस द्वीप के नौ खण्ड हैं तथा वह नौ रत्नों से विभूषित है। उस रत्नद्वीप के मध्यभाग में परम उत्तम एवं रमणीय मणिमय मन्दिर है, जो चारों ओर से ललित वनमालाओं द्वारा विराजित है। उस मणिमय भवन में परम सुन्दर एवं अत्यंत मनोहर मणिजटित पक्का आँगन है – ऐसा ध्यान करें।

चतुःषष्ठ्या मणिस्तम्भैश्चतुर्दिक्षु विराजितम् ।
तत्र सिंहासने ध्यायेत् कृष्णं कमललोचनम् ।। 9

वह आँगन चारों दिशाओं में सोलह – सोलह के क्रम से चौंसठ मणिनिर्मित खम्भों द्वारा सुशोभित है, उस मणिस्तम्भ – मण्डित आँगन में एक सुंदर सिंहासन है, जिसके ऊपर कमलनयन भगवान् श्रीकृष्ण विराजमान हैं।

अनर्घ्यरत्नजटितमुकुटोज्ज्वलकुण्डलम् ।
सुस्मितं सुमुखाम्भोजं सखीवृन्दनिषेवितम् ।। 10
स्वामिन्याश्लिष्टवामांग परमानन्दविग्रहम् ।
एवं ध्यात्वा ततः स्तोत्रं पठेद् भुवि जितेन्द्रियः ।। 11

उनके स्वरूप का इस प्रकार चिंतन करें – वे मस्तक पर बहुमूल्य रत्नजटित मुकुट धारण किये हुए हैं। उनके कानों में दिव्य दीप्ति से परमोज्जवल

कुण्डल झिलमिला रहे हैं। उनके अधर पर मधुर मनोहर मुस्कान है, जिससे भगवान् के मुखारविन्द का सौन्दर्य और भी खिल उठा है। झुंड – की – झुंड सखियाँ उनकी सेवा में संलग्न हैं। स्वामिनी श्रीराधा उनके वामांग से सटी बैठी हैं। श्रीहरि का श्रीविग्रह परमानन्दमय है। इस प्रकार ध्यान करके इन्द्रियों को पूर्ण वश में रखते हुए भूमिस्थ आसन पर बैठकर निम्नाङ्कित स्तोत्र का पाठ करे।

अथ स्तोत्रम्

कृष्णं कमलपत्राक्षं सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
सखीयूथान्तरचरं प्रणमामि परात्परम् ।। 12

श्रृंगाररसरूपाय परिपूर्णसुखात्मने ।
राजीवारुणनेत्राय कोटिकन्दर्परूपिणे ।। 13

जिनके नेत्र प्रफुल्ल कमलदल के समान तथा

श्रीविग्रह सच्चिदानन्दस्वरूप है, जो सखियों के यूथ के भीतर विचर रहे हैं—उन परात्पर परमात्मा श्रीकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ। जो श्रृंगार-रसरूप, परिपूर्ण सुखदस्वरूप, कमल के समान कुछ-कुछ लाल नेत्रों वाले और अपने रूप-लावण्य से करोड़ों कामदेवों को लज्जित करनेवाले हैं (उन भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है)।

वेदाद्यगम्यरूपाय वेदवेद्यस्वरूपिणे ।
अवाङ्मनसविषयनिजलीलाप्रवर्तिने ।। 14
नमः शुद्धाय पूर्णाय निरस्तगुणवृत्तये ।
अखण्डाय निरंशाय निरावरणरूपिणे ।। 15

जिनका स्वरूप वेद आदि से भी अगम्य है, वेदवेद्य ब्रह्म जिनका स्वरूप है तथा जो मन, वाणी के अगोचर (अचिन्तनीय एवं अनिर्वचनीय) अपनी

लीला के प्रवर्तक हैं (उन श्रीकृष्ण को नमस्कार है)। प्राकृत गुणों की वृत्तियाँ जहाँ नहीं पहुँच पातीं; जो परम शुद्ध परिपूर्ण, अखण्ड, अंशरहित और निरावृत स्वरूप हैं – उन भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है।

संयोगविप्रलम्भाख्यभेदभावमहाब्धये ।
सदंशविश्वरूपाय चिदंशाक्षररूपिणे ।। 16
आनन्दांशस्वरूपाय सच्चिदानन्दरूपिणे ।
मर्यादातीतरूपाय निराधाराय साक्षिणे ।। 17

जो संयोग और विप्रलम्भ नामक श्रृंगार भेद के अनन्त भावों के महासागर हैं, जिनका सदंश जगद्रूप है, चिदंश अक्षररूप है और आनन्दांश साक्षात् स्वरूप है। इस प्रकार जो सच्चिदानन्द विग्रह हैं, जिनका रूप असीम है, जो परकीय आधार से शून्य, स्वयं सर्वाधार एवं सर्वसाक्षी हैं – उन श्रीकृष्ण को नमस्कार है।

मायाप्रपञ्चदूराय नीलाचलविहारिणे ।
माणिक्यपुष्परागाद्रिलीलाखेलप्रवर्तिने ।। 18
चिदन्तर्यामिरूपाय ब्रह्मानन्दस्वरूपिणे ।
प्रमाणपथदूराय प्रमाणाग्राह्यरूपिणे ।। 19
मायाकालुष्यहीनाय नमः कृष्णाय शम्भवे ।
क्षरायाक्षररूपाय क्षराक्षरविलक्षिणे ।। 20

जो मायामय प्रपञ्च से दूर रहकर नीलाचल पर विहार करते हैं, माणिक्य और पुष्पराग (पुखराज) मय पर्वत-शिखरों पर अपनी लीला के खेल चलाते रहते हैं, अंतर्यामी चेतन जिनका रूप है, जो ब्रह्मानन्द स्वरूप हैं; प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों के पथ से जो बहुत दूर हैं, जिनका स्वरूप प्रमाणों से अग्राह्य (अप्रमेय) है, जिन्हें माया का कालुष्य छू नहीं सका है, जो शम्भु (कल्याणनिकेतन), क्षररूप, अक्षररूप और क्षर-अक्षर दोनों से विलक्षण रूपवाले हैं-उन श्रीकृष्ण को

नमस्कार है।

तुरीयातीतरूपाय नमः पुरुषरूपिणे ।
महाकामस्वरूपाय कामतत्त्वार्थवेदिने ।। 21
दशलीलाविहाराय सप्ततीर्थविहारिणे ।
विहाररसपूर्णाय नमस्तुभ्यं कृपानिधे ।। 22

जिनका रूप तुरीयावस्था से भी अतीत है, जो पुरुषरूप, महाकामस्वरूप तथा कामतत्त्व के परम तात्पर्य को जाननेवाले हैं-उन भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है। कृपानिधे! आपने दस अवतार विग्रह धारण करके उनके अनुरुप लीलाविहार किये हैं, आप सप्ततीर्थविहारी हैं और विहार-रस से परिपूर्ण हैं। आपको नमस्कार है।

विरहानलसंतप्तभक्तचित्तोदयाय च ।
आविष्कृतनिजानन्दविफलीकृतमुक्तये ।। 23

द्वैताद्वैतमहामोहतमःपटलपाटिने ।
जगदुत्पत्तिविलयसाक्षिणेऽविकृताय च ।। 24

विरहाग्नि से संतप्त भक्तजनों के चित्त में उदित होनेवाले तथा अपने स्वरूपभूत आनन्द को प्रकट करके मोक्ष को भी व्यर्थ कर देनेवाले आप भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है। आप द्वैताद्वैत रूप महामोहमय अन्धकार राशि को विदीर्ण करनेवाले, संसार की सृष्टि और संहार के साक्षी तथा नित्य निर्विकार हैं। आपको मेरा सादर नमस्कार है।

ईश्वराय निरीशाय निरस्ताखिलकर्मणे ।
संसारध्वान्तसूर्याय पूतनाप्राणहारिणे ।। 25

आप सबके ईश्वर हैं, किंतु आपका ईश्वर कोई नहीं है। समस्त शुभाशुभ कर्म को आपने निकाल फेंका है – वे आपको लिप्त नहीं कर सकते।

संसार रूपी अन्धकार का संहार करने के लिये आप सूर्य स्वरूप हैं। पूतना के प्राणों का हरण करने वाले आप भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है।

रासलीलाविलासोर्मिपूरिताक्षरचेतसे ।
स्वामिनीनयनाम्भोजभावभेदैकवेदिने ॥ 26
केवलानन्दरूपाय नमः कृष्णाय वेधसे ।
स्वामिनीकृपयाऽऽनन्दकन्दलाय तदात्मने ॥ 27

आपका अक्षर (निर्विकार या अविनाशी) चित्त रासलीला-विलास की तरंगों से परिपूरित है। स्वामिनी श्रीराधा के नेत्र कमलों से प्रकट होने वाले अनन्त भाव भेदों के एकमात्र आप ही ज्ञाता हैं। आपको नमस्कार है। आप केवलानन्दस्वरूप हैं। स्वामिनी श्रीराधा पर कृपा करके उनके लिये आनन्दकन्द बन जाते हैं। श्रीराधा ही आपकी आत्मा

हैं तथा आप ही सबके स्त्रष्टा हैं। आप परमात्मा श्रीकृष्ण को नमस्कार है।

संसारारण्यवीथीषु परिभ्रान्तामनेकधा ।
पाहि मां कृपया नाथ त्वद्वियोगाधिदुःखिताम् ।। 28
त्वमेव मातृपित्रादिबन्धुवर्गादयश्च ये ।
विद्या वित्तं कुलं शीलं त्वत्तो मे नास्ति किंचन ।। 29

नाथ! मैं संसाररूपी वन की वीथियों में अनेक प्रकार से भटक रही हूँ और आपके वियोग की व्यथा से दुःख में डूबी हुई हूँ। आप कृपा करके मेरी रक्षा करें। आप ही मेरे माता – पिता और बन्धुवर्ग आदि सब कुछ हैं। विद्या, धन, शील और कुल भी आप ही हैं। आपके सिवा मेरा कोई नहीं, कुछ भी नहीं है।

यथा दारुमयी योषिच्चेष्टते शिल्पिशिक्षया ।
अस्वतन्त्रा त्वया नाथ तथाहं विचरामि भोः ।। 30
सर्वसाधनहीनां मां धर्माचारपराङ्मुखाम् ।

पतितां भवपाथोधौ परित्रातुं त्वमर्हसि ।। 31

नाथ! जैसे कठपुतली अपने शिल्पी (सूत्रधार) की शिक्षा के अनुसार चेष्टा करता है, उसी प्रकार मैं भी आपके अधीन होकर आपकी इच्छा के अनुसार ही विचरती हूँ। मैं सब साधनों से हीन तथा धर्म और आचार से विमुख होकर भवसागर में गिरी हुई हूँ। आप कृपया मेरा परित्राण (उद्धार) करें।

मायाभ्रमणयन्त्रस्थामूर्ध्वाधो भयविह्वलाम् ।
अदृष्टनिजसंकेतां पाहि नाथ दयानिधे ।। 32
अनर्थेऽर्थदृशं मूढां विश्वस्तां भयदस्थले ।
जागृतव्ये शयानां मामुद्धरस्व दयापर ।। 33

मैं माया के भ्रमण-यन्त्र में स्थित हो ऊपर-नीचे आती-जाती रहती हूँ और भय से व्याकुल हूँ। दयानिधे! मैंने अपने संकेत-स्थान को

भी नहीं देखा है। नाथ! मेरी रक्षा कीजिये। दयालो! मैं ऐसी मूढ़ हूँ कि अनर्थ को ही अर्थ समझती हूँ, भयदायक स्थान पर भी विश्वस्त (निर्भय) होकर रहती हूँ और जहाँ जागना चाहिये, परमार्थ-साधन के लिये सतत चेष्टा करनी चाहिये, वहीं मैं सोयी हूँ -कर्त्तव्य-विमूढ़ हूँ। आप मेरा उद्धार कीजिये ।

अतीतानागतभवसंतानविवशान्तराम् ।
बिभेमि विमुखीभूय त्वत्तः कमललोचन ।। 34
मायालवणपाथोधिपयःपानरतां हि माम् ।
त्वत्सांनिध्यसुधासिन्धुसामीप्यं नय माचिरम् ।। 35

भूत, भविष्य और वर्तमान की संतान-परम्परा से मेरा अन्तःकरण विवश है-बँधा हुआ है। कमलनयन! मैं आपसे विमुख होकर भयभीत हूँ। मायामय खारे पानी के समुद्र में जलपान-रत हूँ।

प्रभो! आप मुझे अपने संनिधानरूपी सुधा–सिन्धु के समीप शीघ्र पहुँचाइये ।।

त्वद्वियोगार्तिमासाद्य यज्जीवामीति लज्जया ।
दर्शयिष्ये कथं नाथ मुखमेतद्विडम्बनम् ।। 36
प्राणनाथवियोगेऽपि करोमि प्राणधारणाम् ।
अनौचिती महत्येषा किं न लज्जयते हि माम् ।। 37

नाथ! आपके वियोग की पीड़ा को पाकर भी जो मैं जी रही हूँ, यह मेरे लिये बड़ी लज्जा की बात है। इस लज्जा के कारण मैं अपना यह कलंकित मुख आपको कैसे दिखाऊँगी। प्राणनाथ के वियोग में भी जो मैं प्राण धारण करती हूँ, यह मेरा महान् अनुचित कृत्य क्या मुझे लज्जित नहीं कर रहा है?

किं करोमि क्व गच्छामि कस्याग्रे प्रवदाम्यहम् ।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते वृत्तयोऽब्धौ यथोर्मयः ।। 38

क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? किसके आगे अपना दु:ख कहूँ? इत्यादि वृत्तियाँ समुद्र में लहरों की तरह मेरे अन्त:करण में उठती और विलीन होती रहती हैं।

अहं दुःखाकुला दीना दुःखहा न भवत्परः ।
विज्ञाय प्राणनाथेदं यथेच्छसि तथा कुरु ।। 39

मैं दीन हूँ और दु:ख से व्याकुल हूँ। आपसे बढ़कर दु:ख का नाशक दूसरा कोई नहीं है। प्राणनाथ! ऐसा जानकर आप जैसा चाहें, वैसा करें।

ततश्च प्रणमेत् कृष्णं भूयो भूयः कृताञ्जलिः ।
इत्येतद् गुह्यमारव्यातं न वक्तव्यं गिरीन्द्रजे ।। 40

गिरिराजनन्दिनि! इस प्रकार स्तुति करके भगवान् श्रीकृष्ण को हाथ जोड़कर बारम्बार प्रणाम करे। यह मैंने तुमसे गोपनीय स्तोत्र बताया है। इसको हर – एक के सामने नहीं प्रकट करना चाहिये।

एवं यः स्तौति देवेशि त्रिकालं विजितेन्द्रियः ।
आविर्भवति तच्चित्ते प्रेमरुपी स्वयं प्रभुः ।। 41

देवेश्वरि! जो अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हुए सायं, प्रातः और मध्याह्न तीनों कालों में इस प्रकार स्तुति करता है, उसके चित्त में प्रेम रूपी प्रभु स्वयं प्रकट होते हैं।

प्रातः, सायं एवं मध्याह्न – दिन में तीन बार पाठ करने पर अनन्तगुना लाभ होता है। यह पाठ प्रतिदिन बिना लाँघा चलना चाहिये। रोग आदि के समय असमर्थ होने पर किन्हीं सदाचारी ब्राह्मण अथवा घर के दूसरे किसी श्रद्धालु पुरुष के द्वारा कराया जा सकता है। तीव्र उत्कण्ठा तथा विश्वास के साथ, ब्रह्मचर्य का पालन और इन्द्रिय संयम करते हुए इसका नियमित पाठ करने से भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा तथा उनके दिव्य प्रेम की प्राप्ति होती है।

पूज्य श्री करुण दास जी महाराज